

२० से २६ जनवरी १९८५ □ मूल्य ४.०० रु.

आर्य समाज



क्रिकेट?.. कपिल देव?.. कसौदी?

राजनीति चुनावोपरान्त □ पाकिस्तान, पित्तौल और विमान-अपहरण

www.arysamaj.org

१० रु. १०
 २० रु. २०
 ३० रु. ३०
 ४० रु. ४०
 ५० रु. ५०
 ६० रु. ६०
 ७० रु. ७०
 ८० रु. ८०
 ९० रु. ९०
 १०० रु. १००

विक्रिसा



आज सप्त विरव में कैसर-जैसे पातक व नंदलाल तिवारी

असाध्य रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिए क्वारर औषधि को खोज कर लेना पड़ा है, परंतु दुर्भाग्यवश अभी तक वैज्ञानिकों को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चल पाया है, जिससे इस भीषण रोग पर पूरी तरह से कब्ज पाया जा सके. विरव के सबसे इन्तत यष्ट— अमरीक व सोवियत संघ अपने-अपने शोध-संस्थानों में करोड़ों का खर्च कर रहे हैं, जिससे ऐसी कोई दवा या विधि खोजी जा सके, जो कैसर पर विजय दिलाने के लिए पूरी तरह सुदृढ व क्वारर हो. आज विरव में उपचार के जो साधन उपलब्ध हैं, उनसे मरीज को कुछ तात्कालिक राहत मिले ही मिल पाये, परंतु कालांतर में रोग पुनः अपने भीषण काल-रूपी जबड़े में मरीज को फंसवा शुरू कर देता है. इस मर्ज को भीषण अंधकारमय कालरात्रि में अंधा की एक किरण प्रस्तुतिय हुई है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में कैसर पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी.

इस रोग के मरीजों को जीवनदान देने में अरबों की यह चमक गौदिया (महाएण्ट) नगर में चमकी है, जहाँ के एक वैद्यरत्न, नंदलाल तिवारी ने अपने अथक परिश्रम द्वारा इस भीषण रोग से मुक्तबला करने के लिए एक ऐसी क्वारर व चमत्कारिक दवा को खोज कर लिया है, जो मात्र इस रोग के कब्ज में ही नहीं, बल्कि उसे जड़ से समाप्त करने में भी पूरी तरह से सक्षम है.

नंदलाल तिवारी एजस्थान के निंबडी-कलां, जिला नागौर के मूल निवासी हैं. विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों को खोज करके का शौक उन्हें प्रारंभ से ही रहा है. इसी दौरान उनके एक मित्र को मीठ कैसर से हुई थी, जिसके फलस्वरूप वे इतने विचलित हुए कि उन्होंने अपना सारा ध्यान कैसर की दवा को खोज में लगा दिया. ईश्वर की कृपा से उनका परिश्रम रंग लाया तथा खोज सफल रही. दवा को खोज के उपरंत, मरीजों को दवा देने के पूर्व, वे इस बात के प्रति अवरत हो जाय चढे थे कि कहीं यह दवा मरीजों का कुछ मुस्सलन हो नहीं करेगी! इसके लिए उन्होंने स्वतः ही कुछ दिनों तक दवा का सेवन करके देखा तथा पूरी तरह अवरत हो जाने के बाद ही मरीजों को दवा देना प्रारंभ किया.

रोगमुक्त हुए मरीज स्वयंसेवक तिवारी जी ने अपनी दवा जीम व रक्त-कैसर से पीड़ित मरीज को दी. परंतु इसी बीच उनके इस खोज को एक नया आयाम श्रीमती तारुबाई चौरसिया के कैसर से मिला. गौदिया नगर के एक प्रसिद्ध बकील एच. एच. चौरसिया की माता श्रीमती तारुबाई चौरसिया अन्न-नलिका के कैसर से पीड़ित थीं. उनका पर्याप्त इलाज कराया गया, परंतु उन्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ. उन्हें भोजन अदि ग्रहण करने में भी कफनी कठिनाई होती थी. अंत में चौरसिया जी ने तिवारी जी से संपर्क साधा. तिवारी जी ने उन्हें दवा सेवन करने को दी. चौथे दिन से ही दवा का प्रभाव दिखलाई देने लगा. श्रीमती चौरसिया ने दवा का सेवन लगभग छह माह तक किया. आज वे कैसर से पूरी तरह मुक्त हो चुकी हैं तथा एक स्वस्थ व्यक्ति की भांति अहार ग्रहण करती हैं.

दूसरा उदाहरण श्री गौदिया के एक अन्य बकील मनोहर बापट के ५२ वर्षीय एटनी अर्जुन सिंह का है. उन्हें भी अन्न-नलिका का कैसर था. चारों तरफ से निर्यात हो कर उन्होंने तिवारी जी को दवा का सेवन किया तथा आज वे कैसर से मुक्त हो चुके हैं.

गौदिया के समीप के एक ग्राम—टांडा की श्रीमती बायबाबाई खाम्बाले का कैसर तो बड़ा ही अरचर्यजनक है. बायबाबाई स्तर के कैसर से पीड़ित थीं. वे इतनी कमजोर हो

आयुर्वेद में कैसर की चिकित्सा क्या एक भारतीय वैद्य ने कैसर पर विजय पा ली है?

अशोक कुमार सक्सेना

कैसर पर विजय— चूंकि यह बात सार्वजनिक हित की है, इसलिए हम संबद्ध लेख छाप रहे हैं. मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सरकारों को चाहिए कि वे कैसर-उपचार की इस पद्धति की प्रामाणिकता की जांच करावें और जन-कल्याण में अपना सहयोग दें.

गुजरात से गौदिया अये. योगेश को अपनी गंभीर अवस्था में ही दवा दी गयी. दवा ने ब्रह्मरत्न-जैसा काम किया. दवा के सेवन के एक सप्ताह के अंदर ही योगेश का रक्तस्त्राव बंद हो गया. उसके खून की जांच करने से पता चला कि उसके रक्त में यीकूट कैसर के सेलस क्रमशः घटते जा रहे हैं. आज योगेश कैसर से पूरी तरह मुक्त हो चुका है.

दैनपुर (मध्यप्रदेश) के डॉक्टर प्रकाशचंद वासल के पिता प्रकाशचंद को भी अन्न-नलिका का कैसर था. बर्बाद के टपटा



श्रीमती तारुबाई चौरसिया के कैसर-रोग के दो-दोनों दिनों १०.६.८३ वाले दिनों में अन्न-नलिका का कैसर स्पष्ट टीख रहा है. १०.१२.८३ को लिये गये इक्साइने में कैसर का प्रभाव पूरी तरह से गायब है

चुकी थी कि यह समझ जा रहा था कि अब वे कुछ ही दिनों की मेहमान हैं. अंतिम समय जान कर सभी रिश्तेदारों व दिव्यचिंतकों ने अपनी-अपनी सहजपुष्टि व्यक्त की तथा उनके पुत्रों ने ब्राह्मणों को गोदान भी कर दिया. इसी बीच उनके एक पुत्र ने. बी. रहस्यमाले को, जो शिक है, तिवारी जी की दवा का पता चला. श्रीमती बायबाबाई को मरणासन अवस्था में ही दवा दी गयी. दो ही दिनों बाद उनकी मंथलें खुल गयीं. स्तन पर ठंठे हुए जखम सूखने लगे तथा वे भोजन लेने लगीं. दवा के मात्र पंद्रह दिनों के सेवन से वे इतनी स्वस्थ हो गयीं कि निकट के एक रिश्तेदार की शरण में भी सम्मिलित होने चली गयीं.

इसी प्रकार का एक उदाहरण गुजरात (एहवा) के एक डॉक्टर एम. एस. परमार के छोटे भाई योगेश का है. २८ वर्षीय योगेश रक्त-कैसर से पीड़ित था तथा बर्बाद के टपटा कैसर रित्च संस्थान द्वारा भी उसे जवाब मिल चुका था. योगेश को हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसके नाक, कान, मुँह से रक्त निकलना शुरू हो गया था. इसी बीच डॉ. परमार के एक कौपाठर को किसी तरह तिवारी जी की दवा का पता चला. उसने डॉ. परमार को यह सलाह दी कि वे इस दवा का भी सेवन करावा कर दें. डॉ. परमार दवा लेने

अस्पताल के डॉक्टरों ने 'जिंदा रहने की कोई उम्मीद नहीं है' कह कर उन्हें वापस भेज दिया था. तिवारी जी की दवा से उन्हें तीन माह में ही ९० प्रतिशत फायदा हो गया. आज वे भी पूरी तरह कैसर से मुक्त हो चुके हैं.

ऐसे सैकड़ों उदाहरण तिवारी जी के पास हैं. उनके पास दवा लेने बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, अंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, बंगाल, गुजरात, उड़ीसा, राजस्थान अदि स्थानों से लोग आ रहे हैं. दवा के सेवन से सभी को लाभ हो रहा है. तिवारी जी ने मुझे बताया कि उनकी दवा हर प्रकार के कैसर पर पूरी तरह क्वारर है. दवा के सेवन से फेफड़े, स्तन, गर्भाशय, गले, जीभ, यानी शरीर के किसी भी भाग का कैसर ठीक हो सकता है.

दैनपुर पर भी इस दवा का प्रयोग पूरी तरह सफल रहा है. दवा के प्रयोग से दैनपुर फेफड़े की तक तक क्वारर हो गया उसमें से मयाद निकलना शुरू होता है. मयाद निकलने के बाद धाव सूखने लगता है तथा सूख कर मरीज को चमकी से मिल जाता है. प्राथमिक स्तर का कैसर तीन माह में तथा फेला हुआ कैसर छह माह में पूरी तरह ठीक हो सकता है. सावधानी के लिए मरीज को अपने ही दिन दवा खाने की

शेष पृष्ठ ५८ पर—

विक्रिती



आ. अशोक कुमार सक्सेना

आयुर्वेद में कैसर की चिकित्सा क्या एक भारतीय वैद्य ने कैसर पर विजय पा ली है? □ अशोक कुमार सक्सेना

ने. लिए कारण ओपनि की छान की जा रही है. पण दुर्भाग्यवश अभी तक वैज्ञानिकों को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चल पाया है, जिससे इस भीषण रोग पर पूरी तरह से कबू पाया जा सके. निरव के मूलतः उन्मत्त एवम्— अम्लीक व सोवियत रूप अपने-अपने रोध-सम्भारों में कटेपुं का छव कर रहे हैं. जिससे ऐसी कोई दवा या विधि छोजी जा सके, जो कैसर पर विजय दिलाने के लिए पूरी तरह सुरक्षित व कारगर हो. आज विश्व में उपचार के जो मापन उपलब्ध हैं. उनसे मोज की कुछ तात्कालिक लाभ भले ही मिल जायें, पणु कालान्तर में रोग पुनः अपने भीषण काल-रूपी जवड़े में मजिब को नसना शुरू कर देता है. इस ग. की भीषण अंधकारमय कालावधि में आराम की एक क्षण प्र.पुटित हुई है. जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में कैसर पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी.

इस रोग के मजिबों को जीवन्तन देने में आराम की यह चमक गोरिया (पहाराट्ट) नग में चपकी है. जहां के एक वैद्यराज, नंदलाल तिवारी ने अपने अथक परिश्रम द्वारा इस भीषण रोग से मुकबला करने के लिए एक ऐसी कारगर व चमत्कारिक दवा की खोज की है. जो यात्र इस रोग को कबू में ही नहीं, बल्कि उसे जड़ से समाप्त करने में भी पूरी तरह से सक्षम है. नंदलाल तिवारी राजस्थान के निवड़ी-कला, जिला नागौर के मूल निवासी हैं. विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की खोज करने का शौक उन्हें प्रायः से ही रहा है. इसी दौरान उनके एक मित्र की नीत कैसर ने हुई थी. जिसके फलस्वरूप वे इनने विपरीतम हुए कि उन्होंने अपना साध प्यान कैसर की दवा की खोज में लगा दिया. ईश्वर की कृपा से उनका परिश्रम रोज लाभा तथा खोज सफल रही. दवा की खोज के उपरान्त, मजिबों को दवा देने के पूर्व, वे इस बात के प्रति आश्चर्य हो जाना चाहते थे कि कहीं यह दवा मजिबों का कुछ नुकसान तो नहीं करेगी! इसके लिए उन्होंने स्वतः ही कुछ दिनों तक दवा का सेवन करके देखा तथा पूरी तरह आश्चर्य हो जाने के बाद ही मजिबों को दवा देना प्रारंभ किया.

कैसर पर विजय— चूंकि यह बात सार्वजनिक हित की है, इसलिए हम संबद्ध लेख छाप रहे हैं. मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सरकारों को चाहिए कि वे कैसर-उपचार की इस पद्धति की प्रामाणिकता की जांच कारवायें और जन-कल्याण में अपना सहयोग दें.

रोगमुक्त हुए मरीज सर्वप्रथम तिवारी जी ने अपनी दवा जीब व रक्त-कैसर से पीड़ित मरीज को दी. पणु इसी बीच उनकी इस खोज के एक नया अंगण श्रौमती तापवार्ड चौरिया के कैसर से गोरिया नगर के एक प्रसिद्ध ग्वालियर के कैसर से जाता श्रौमती तापवार्ड चौरिया अन्म-निलका के कैसर से पीड़ित थी. उनका पर्यव इलाज करवाया गया, पणु उन्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ. उन्हें भोजन आदि ग्रहण करने में भी काफी कठिनाई होती थी. अंत में चौरिया जी ने तिवारी जी से संपर्क साधा. तिवारी जी ने उन्हें दवा सेवन करने को दी. चौथे दिन से ही दवा का प्रभाव दिखलाई देने लगा. श्रौमती चौरिया ने दवा का सेवन लगातार छह माह तक किया. आज वे कैसर से पूरी तरह मुक्त हो चुकी हैं तथा एक स्वस्थ व्यक्ति की भांति आहार ग्रहण करती हैं. दूसरा उदाहरण भी गोरिया के एक अन्य वकील मनोहर नाट के ५२ वर्षीय एक्टर अर्जुन सिंह का है. उन्हें भी अन्म-निलका का कैसर था. चारों तक से निराश हो कर उन्होंने तिवारी जी की दवा का सेवन किया तथा आज वे कैसर से मुक्त हो चुके हैं. गोरिया के समीप के एक ग्राम—टंडा की श्रौमती तापवार्ड रोगिणियों का कैसर तो कदा ही आश्चर्यजनक है. तापवार्ड रक्त के कैसर से पीड़ित थी. वे इसी कसबोर हो

जुकी थी कि यह समय या रात या कि अगले कुछ ही दिनों की मेघमन है. अतिशय समय जान कर सभी रोगियों व विपत्तिकर्तों ने अपनी-अपनी सलसुपुति व्यक्त की तथा उनके पुत्रों ने बाल्यो को गोदान भी कर दिया. इसी बीच उनके एक पुत्र जे. बी. शौगंडारी को, जो शिक्षक है, तिवारी जी की दवा का पता चला. श्रौमती तापवार्ड की मत्वात्मन अवस्था में ही दवा दी गयी. दो ही दिनों बाद उनकी अंखें खुल गयीं. तब पर उन्हें कुछ सुख सुलने लगे तथा वे भोजन लेने लगीं. दवा के सात पंद्रह दिनों के सेवन से वे इसी स्वस्थ हो गयीं. श्री निकट के एक रिश्तेवा की रायों में भी सहमिलित होने वाली गयीं.

इसी प्रकार का एक उदाहरण गुजरात (एहवा) के एक डॉक्टर एं. एं. पणम के छोटें भाई योगेश का है. २८ वर्षीय योगेश रक्त-कैसर से पीड़ित था तथा नर्ब के रात कैसर रिसर्च संस्थान द्वारा भी उसे जवान मिल चुका था. योगेश की शलत श्रौमती रिगड चुकी थी कि उसके बाल, रक्त, मूत्र से रक्त निकलना शुरू हो गया था. इसी बीच श्री. पणम के एक कंणडंडर को किसी तरह तिवारी जी की दवा का पता चला. उन्होंने श्री. पणम को यह सलाह दी कि वे पत्र देना का भी सेवन करावा कर देखें. डॉ. पणम दवा लेने गुजरात से गोरिया आये. योगेश को अपनी नजुक अवस्था में ही दवा दी गयी. दवा ने ब्रह्मरव-जैसा काम किया. दवा के सेवन के एक सप्ताह के अंदर ही योगेश का रक्तस्राव बंद हो गया. उसके खून की जांच करने से पता चला कि उनके रक्त में भीषुद कैसर के तेलव प्रमत्ता: घटते जा रहे हैं. आज योगेश कैसर से पूरी तरह मुक्त हो चुका है. नैपूर (मध्यप्रदेश) के डॉक्टर प्रकराशवद यासल के पिता पणवद को भी अन्म-निलका का कैसर था. नर्ब के टटा

अस्थाल के डॉक्टरों ने 'गिदा रहने को कोई उपाय नहीं है. कुछ कर उन्हें मायास देवा दिया था. तिवारी जी की दवा से उन्हें तीन माह में ही १० प्रतिशत कणवटा हो गया. आज वे भी पूरी तरह कैसा से मुक्त हो चुके हैं. ऐसे संकेतों उदाहरण तिवारी जी के पास हैं. उनके पास दवा लेने बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, बंगाल, गुजरात, उड़ीसा, राजस्थान आदि स्थानों से तिवारी जी ने मुझे बताया कि उनकी दवा हर प्रकार के कैसा पर पूरी तरह कारगर है. दवा के सेवन से निरपे, रक्त, गर्भाशय, गले, जीभ, यानी शरीर के किसी भी भाग को कैसर ठीक हो सकता है.

दूसरा पर भी इस दवा का प्रयोग पूरी तरह सफल रहा है. दवा के प्रयोग से दूसरे जोड़े की तरह एक कर घुटता है तथा उदरमें से मवाद निकलना शुरू होता है. मवाद निकलने के बाद थोव सुलने लगता है तथा कुछ का मरीज को चपड़ी से मिल जाता है. प्रारंभिक स्तर का कैसर तीन माह में तथा फिदा हुआ कैसर छह माह में पूरी तरह ठीक हो सकता है. सावधानी के लिए मरीज को उतने ही दिन दवा खाने की

शेष पृष्ठ ५८ पर—

उपचार पद्धति

रोगी यदि तिवारी जी के पास अपने को निम्नी में हो, तभी उसे मुलायम जाता है, अन्यथा चोपरा के परिवार के किसी व्यक्ति को मरीन के रोग-विपणक कणकों को ले कर आना पड़ता है, सर्वप्रथम दवा एक या दो मांह की दो जाती है तथा फणपटा होने पर पुनः मुलायम जाता है.

अपनी दवा को मान्यता दिलाने के लिए नरकाला तिवारी समानवेली संस्थाओं तथा सरकारी से पत्र-व्यवहार कर रहे हैं, पर उन्होंने बड़े ही दुःख से बताया कि उन्हें पण-पण पर शालफोहारशी का सामन कानन पड़ रहा है. उन्होंने कुछ निरास हो कर बतलाया कि यदि उनकी दवा को फालत में मान्यता नहीं मिली, तो वे विदेश जति के लिए बंध्य हो जायेंगे. उनका इरादा संपूर्ण मानव जाति को सेवा करने का है. लाडों-कपड़ों केसर-पीकित मरीनों को जतन बचाना चाहते हैं. अब आवश्यकता है कि सरकारी व समाजसेवी संस्थानों बांधकों से तिवारी जी को दवा तथा उनके दार ठीक किये जायें. मरीनों को संव करों तथा तिवारी जी को विविध प्रकार की सहायता प्रदान करें, ताकि दवा का पूर्ण परिष्कृत रूप आम जनता की सतसे मूल्य पर उपलब्ध हो सके.

यह पत्र लगा लेना चाहिए कि वे कहां उपलब्ध रहें! वे मारत में माह में तीन जगह पर मरीनों को दवा देते हैं—गोंदिया, कलकता तथा जयपुर. गोंदिया को उनको पता है—नरकाल तिवारी
 मुनिक मेडिकल स्टोर्स
 इमरुत, कुख्या लाम
 मुंबई—४४११०१
 फोन : ११०५ (आवाता), २५१२ (कलकता)
 तिवारी जी को दवा से मरिन व पर्यवर्गी व व्यक्ति भी लाभ उठ सकता है.

८ * वर्मपुर * २० अक्टो १९८५

तसा एक भारतीय वैद्य ने...

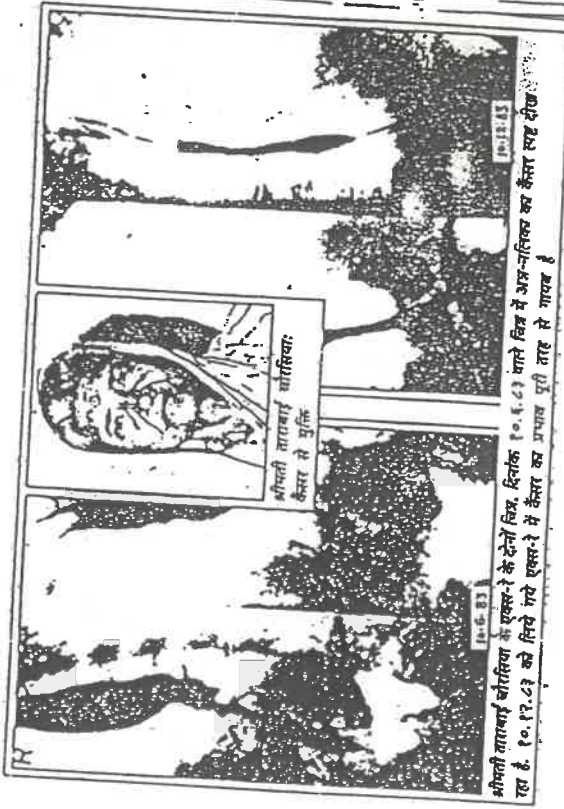
→ • ४४ ४४ का शेष

सलाह दी जाती है, ताकि रोग के देवार होने को रक्षाई संपादन न हो. दवा का सेवन शहर के साथ दिन में तीन बार पोचन के बाद करना होता है. हवा लेने के टोएन घेद का साक रहना आवश्यक है. छोटी चीनों के सेवन की सलाह मनाही है.

बायस्पी की आवश्यकता नहीं

प्रारंभिक स्टेज पर केसर का पता ही नहीं चलता और जब पता चलता है, तब तक यह साज्जाव ही चुक होता है. नरकाल केसर का पता लगाने के लिए बायस्पी की जाती है. जिसमें शरीर के केसर-संशुद्धि पाग के छेदे से अंग को काट कर विविध परीक्षणों दार पर देखा जाता है. कि इसमें केसरप्रत कोशिकाएं हैं या नहीं! इस दवा दार बायस्पी कलाने के संशुद्ध से ही मुक्ति मिल जाती है. मरीन को घाा दिनों तक दवा खाने की सलाह दी जाती है. औषधि-सेवन के चौथे दिन से ही केसरप्रत स्वान पर एक विरोध प्रसार की खुजली या अंदर-से-अंदर एक टक-सी मारुल होने लगती है. मरीन को यदि ऐसी अनुभूति हो, तो बाय.पी. केसर ही है. यदि ऐसा न लागे, तो समीप केसर नहीं है.

तिवारी जी के अनुसार, यह बायण गला है कि केसर आभास्य है. अब से कुछ दारक पूर्ण दो. नी. के बारे में भी यही समास जाता था, परंतु अब से मेडिसिन का अतिविकार हुआ है, तब से दो. नी. एक सामन्य सा रोग हो चुका है. केसर भी एक रोग ही रोग है, जिसे आभास्य इच्छिए समझा जा रहा है. क्योंकि इसकी कोई बजार दवा नहीं मिलती है. तिवारी जी ने बताया कि केसर एक सामन्य सा रोग है तथा इसकी चिकित्सा दो. नी. से भी साल है.



श्रीमती नारायण चौधरी के पुत्र के एक मरीन में अज्ञ-नरकाल का केसर स्पष्ट देखें

एक है. १०.१२.८३ को तिवारी शरीर पर १९८३ में केसर का प्रभाव पूरी तरह से गायब है